International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-12-2020; Accepted: 06-01-2021; Published: 25-01-2021
www.socialsciencejournal.in
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 63-68

स्वर्ण जयंती ग्राम रोजगार योजना का ललितपुर जनपद की महिलाओं का आर्थिक- सामाजिक विकास: एक अध्ययन

वन्दना सिंह[1], डॉ. अर्चना कुशवाह[2]

[1] शोधार्थिनी (Ph.D.) समाजशास्त्र, शा॰ कमलाराजा कन्या स्वशासी, स्नातकोत्तरमहाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

[2] प्राध्यापक समाजशास्त्र, शा॰ कमलाराजा कन्या स्वशासी, स्नातकोत्तरमहाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

ग्रामीण गरीबों को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए एक समन्वित कार्यक्रम के रूप में अप्रैल 01, 1999 को शुरू की गई योजना का उदेश्य गरीबी रेखा से ऊपर जीवन कर रहे लोगों की मदद करके सामाजिक एकजुटता, प्रशिक्षण, क्षमता, निर्माण और आमदनी देने वाली परिसम्पत्तियों की व्यवस्था के जरिये उन्हें स्वयं सहायता समूहों के रूप में संगठित करता है। यह कार्य बैंक ऋण और सरकारी सब्सिडी के जरिये किया जाता है। लोगों की अभिवृत्ति और कौशल संसाधनों की उपलब्धता और बाजार की संभाव्यता के आधार पर चुने हुए मुख्य कार्य कलापों के द्वारा कार्य कलाप समूह की स्थापना पर योजना ध्यान देती है। इस योजना में प्रक्रियागत दृष्टिकोण और गरीब ग्रामीणों की क्षमता निर्माण पर बल दिया जाता है। इसलिए इसमें स्वयं सेवी सहायता समूहों के विकास और पोषण जिसमें कौशल-विकास भी शामिल है, में गैर-सरकारी संगठनों/सी0बी0ओज0/व्यक्तियों/बैंकों को स्वयं सहायता संवर्धन संस्थान/सुविधा प्रदाता के रूप में शामिल किया जाता है। योजना के तहत स्थानीय जरूरतों के मुताबिक सामाजिक मध्यस्थता और कौशल विकास प्रशिक्षण पर आने वाली लागत उपलब्ध करायी जाती है। समूहों के विकास की अवस्था के आधार पर प्रशिक्षण, आवर्ती कोश में आवंटन और आर्थिक कार्य कलाप हेतु निधि के उपयोग में डी0आर0डी0ए0 और राज्यों के लचीलेपन की गुंजाइश दी गयी है। इस कार्यालय के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर आय सृजन के अवसर पैदा करने के लिए गरीब व्यक्तियों की क्षमता और हर क्षेत्र की भूमि आधारित और अन्य सम्भावनाओं के आधार पर बड़ी संख्या में लघु उद्यमों की स्थापना पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इस लिए इसमें विभिन्न घटकों जैसे गरीब व्यक्तियों में क्षमता पैदा करना, कौशल विकास प्रशिक्षण, ऋण, प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण, विपणन और ढांचागत सहायता पर विशेष बल दिया जाता है। योजना के अन्तर्गत सब्सिडी कुल परियोजना लागत के 30 प्रतिशत दर से दी जाती है लेकिन इसकी अधिकतम सीमा 7500 रु (अनुसूचित जातियों /अनुसूचित जनजातियों और विकलांगों के लिए यह सीमा 50 प्रतिशत रखी गयी है जो अधिकतम 10000 रु है) तय की गयी है।

मूल शब्द: स्वर्ण जयंती ग्राम रोजगार योजना, ग्रामीण गरीबों, स्वरोजगार

प्रस्तावना

आजादी के बाद गांवों विकास और वहां के लोगों के लिए कृषि के साथ-साथ रोजगार के दूसरे अवसर जुटाने के उदेश्य से तरह-तरह की योजनाएं चलाई गईं। भारत के गांवों में रोजगार की व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारे देश की लगभग दो-तिहाई आबादी गांवों में बसती है। जाहिर है गांवों में लोगों कि लिए रोजगार

जुटाए बिना भारत को विकसित देशो की श्रेणी में खड़ा करने का सपना पूरा नहीं हो सकता। यह सच है कि 2005 में शुरू हुए महात्मा गांधी नरेगा की शुरुआत के बाद गांवों में रोजगार का स्वरूप बदला है और इसके अनेक सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। सशक्तिकरण की विचारधारा पर एक नारीवादी दृष्टिकोण की रूपरेखा प्रस्तुत की है। चूंकि सशक्तिकरण का तात्पर्य एजेंसी से है अतः नारीवादी परिप्रेक्ष्य में अधिकार का तात्पर्य 'कार्य करने की शक्ति से है, यह पदक्रम में अधिकार क्रम व्यवस्था के विपरीत है, जहां इसका अर्थ 'पूर्ण सत्ता संसाधनों, लोगों आदि से है। हाल के शोध में इस बात पर चर्चा की गई है कि कार्य स्थल पर बेहतर स्थितियां, विशेषकर बच्चों की देखभाल के लिए किस तरह निरंतर चुनौती बनी हुई हैं। अपने शोध में लेखकों ने पाया कि महिलाएं बेहतर निर्णय ले रही हैं, फिर भी महिला मजदूरों के लिए कार्य स्थलों पर स्थितियां निरंतर चुनौतीपूर्ण बनी हुई हैं। परिवार की मुखिया के रूप में महिलाओं, अकेली महिलाओं और बुजुर्ग महिलाओं द्वारा सामना की जारी रही कठिनाइयों का पता लगाया है। गरीब महिलाओं के असुरक्षित समूहों पर दोहरा खतरा होता है, और उनकी जरूरतों और चिंताओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसलिए, किसी महिला के दृष्टिकोण से, बेहतर कार्य स्थितियों का अभिप्राय स्वतंत्रा रूप से कार्य करना और कार्य स्थलों पर अनुकूल माहौल जैसे शिशु देखभाल, आश्रय और दवाओं का प्रावधन करना है। ये सभी महिलाओं की एजेंसी और कार्य करने की उनकी क्षमता के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करते हैं। भारत में महिला श्रमशक्ति की भागीदारी की अत्यंत निम्न दर को बढ़ाने के लिए व्यवहारमूलक हस्तक्षेप करना और सामाजिक प्रचलनों पर काम करना आवश्यक है।

ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य का वृहद विवेचन करते हुए लिखा है कि "एक ओर तो सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं, मर्यादाओं तथा पुरूष प्रधान समाज एवं पितृ सत्तात्मक पारिवारिक संगठन के परिणाम स्वरूप महिलाओं की प्रतिबंधित आर्थिक सहभागिता को विस्तृत करने में सामाजिक आर्थिक विकास, ग्रामीण पुनर्निर्माण कार्यक्रम और महिला आरक्षण कार्यक्रम ने पर्याप्त मात्रा में योगदान दिया है। किन्तु दूसरी ओर विकास की इसी प्रक्रिया निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि यदि हम ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक शक्ति एवं उनकी प्रभावशीलता का विस्तार चाहते हैं तो इसके लिए यह आवश्यक है कि पुरूष प्रधान समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तित हो। परिवार में महिलाओं के समाजीकरण एवं उसकी भूमिका के नवीन प्रतिमानों का विकास हो। यदि हम ऐसा करेंगे तो सही मायने में ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हो सकती है, जिससे भारतीय ग्रामीण समाज भी शहरीय समाज की भांति आर्थिक रूप से मजबूत एवं सशक्त होगा।" देश में संचालित राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर की समस्त ग्राम्य विकास योजनाओं का आधार बिन्दु भी नारी सशक्तीकरण है और अब समाज में इनके परिणाम दिखने भी प्रारम्भ हो गये हैं। हालांकि अभी हम वांछित परिणामों की ओर अग्रसर हैं।

शोध पद्धति

ललितपुर जनपद में महिलाओं का संक्षिप्त विवरण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है। इसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कुल जनसंख्या में से 1,046,214 ग्रामीण महिलाऐं थीं जो कुल महिला संख्या का 85.64 प्रतिशत था और उनका साक्षरता प्रतिशत 46.78 था। जबकि शहरी महिलाओं की संख्या 175,378 थी और यह जनपद में कुल महिला संख्या का 14.36 प्रतिशत थी और इनका साक्षरता प्रतिशत 73.51 था।

तालिका 1: ललितपुर जनपद में महिलाऐं

विवरण	ग्रामीण	शहरी
कुल जनसंख्या	1,046,214	175,378
जनसंख्या प्रतिशत	85.64	14.36
महिला जनसंख्या	496,736	83,845
पुरुष जनसंख्या	549,478	91,533
कुल साक्षर	517,428	123,763
कुल महिला साक्षर	190,036	53,569
कुल पुरुष साक्षर	327,392	70,194
साक्षरता प्रतिशत	60.38	81.18
महिला साक्षरता प्रतिशत	46.78	73.51
पुरुष साक्षरता प्रतिशत	72.64	88.21
स्त्रोत-भारत सरकार, (2011)		

प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनपद के कुल गांवों में से 25 गांवों का चयन दैव निदर्शन विधि के माध्यम से किया गया। अध्ययन की इकाई ललितपुर में रहने वाली ग्रामीण महिलाएँ थीं। समस्त समग्र को तीन वर्गों में विभाजित किया गया, नामशः सामान्य वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग (तालिका 2)।

तालिका 2: अध्ययन हेतु चयनित गांवों की सूचनाऐं

चयनित गांवों की संख्या	**25**
कुल जनसंख्या	51166
कुल परिवार	9149
उत्तरदाता अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग	115
उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग	221
उत्तरदाता सामान्य वर्ग	164
कुल उत्तरदाताओं की संख्या	500

प्रस्तुत अध्ययन में दैव निदर्शन पद्धति द्वारा जनपद की ललितपुर तहसील में अध्ययन में सम्मिलित महिलाओं में से 30 सामान्य जाति वर्ग की, 38 अन्य पिछड़ा वर्ग की तथा 27 अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की कुल 95 महिलाऐं, महरौनी तहसील में अध्ययन में सम्मिलित महिलाओं में से 59 सामान्य जाति वर्ग की, 80 अन्य पिछड़ा वर्ग की तथा 48 अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की कुल 187 महिलाऐं और तालबेहट तहसील में अध्ययन में सम्मिलित महिलाओं में से 75 सामान्य जाति वर्ग की, 103 अन्य पिछड़ा वर्ग की तथा 40 अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की कुल 218 महिलाऐं थीं। इस प्रकार सम्पूर्ण ललितपुर जनपद से 164 सामान्य जाति वर्ग की, 221 अन्य पिछड़ा वर्ग की तथा 115 अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की कुल 500 महिलाऐं अध्ययन में सम्मिलित रहीं। प्राथमिक तथ्यों का संकलन प्रेक्षण अनुसूची एवं साक्षात्कार प्रविधि द्वारा किया गया है जबकि द्वितीयक तथ्यों का संकलन प्रकाशित एवं अप्रकाशित अभिलेखों के माध्यम से किया गया है।

स्वर्ण जयंती ग्राम रोजगार योजना 5 अंक पैमाना

जनपद में ललितपुर तहसील में चयनित उत्तरदाता महिलाओं से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम को 5 अंक पैमाने पर 2.9 (सामान्य महत्व की) अंक प्रदान किये, वहीं महरौनी तहसील में 2.5 (सामान्य महत्व की) अंक तथा तालबेहट तहसील में 2.5 (सामान्य महत्व की) अंक प्रदान किये गये। जनपद की सामान्य जाति वर्ग के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाता महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम को 5 अंक पैमाने पर 2.6 (सामान्य महत्व की) अंक प्रदान किये, वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग की महिलाओं ने 2.5 (सामान्य महत्व की) अंक तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की महिलाओं ने 2.7 (सामान्य महत्व की) अंक प्रदान किये। निष्कर्ष था कि जनपद में चयनित उत्तरदाता महिलाओं ने स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम को 5 अंक पैमाने पर 2.6 (सामान्य महत्व की) अंक प्रदान किये गये।

तालिका 3: स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना को 5 अंक पैमाने पर अंक

तहसील	**सामान्य**		**अपिव**		**अजा एवं अज**		**योग**	
	संख्या	**अंक**	**संख्या**	**अंक**	**संख्या**	**अंक**	**संख्या**	**अंक**
ललितपुर	30	2-8	38	2-9	27	2-8	95	2-9
महरौनी	59	2-7	80	2-6	48	2-4	187	2-5
तालबेहट	75	2-4	103	2-4	40	2-9	218	2-5
जनपद	164	2-6	221	2-5	115	2-7	500	2-6

शोध परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान चयनित उत्तरदाता महिलाओं के स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम संचालन सम्बन्धी ज्ञान के आकलन हेतु प्रश्न पूछा गया था कि "क्या आपको पता है कि सरकार द्वारा ग्रामीण विकास के लिए स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम संचालित है?" ललितपुर तहसील में चयनित उत्तरदाता महिलाओं की संख्या जिन्हें स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के संचालन का ज्ञान था 54.7 प्रतिशत थी जबकि शेष 45.3 प्रतिशत को इसका ज्ञान नहीं था, वहीं महरौनी तहसील में इनकी संख्या क्रमश: 48.1 तथा 51.9 प्रतिशत एवं तालबेहट तहसील में

50.0 तथा 50.0 प्रतिशत थी। जनपद की सामान्य जाति वर्ग के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाता महिलाओं की संख्या जिन्हे स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के संचालन का ज्ञान था 45.7 प्रतिशत थी जबकि शेष 54.3 प्रतिशत महिलाओं को इसका ज्ञान नहीं था, वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग में इनकी संख्या क्रमश: 50.7 तथा 49.3 प्रतिशत एवं अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग में 55.7 तथा 44.3 प्रतिशत थी। निष्कर्ष था कि जनपद में चयनित उत्तरदाता महिलाओं में से 50.2 प्रतिशत को स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के संचालन का ज्ञान था जबकि शेष 49.8 प्रतिशत को इसका ज्ञान नहीं था।

तालिका 4: सरकार द्वारा संचालित ग्रामीण विकास के लिए स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम

तहसील	प्रत्युत्तर	सामान्य		अपिव		अजा एवं अज		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
ललितपुर	हा	16	53-3	20	52-6	16	59-3	52	54-7
	नहीं	14	46-7	18	47-4	11	40-7	43	45-3
	तहसील	30	100-0	38	100-0	27	100-0	95	100-0
महरौनी	हा	26	44-1	39	48-8	25	52-1	90	48-1
	नहीं	33	55-9	41	51-3	23	47-9	97	51-9
	तहसील	59	100-0	80	100-0	48	100-0	187	100-0
तालबेहट	हा	33	44-0	53	51-5	23	57-5	109	50-0
	नहीं	42	56-0	50	48-5	17	42-5	109	50-0
	तहसील	75	100-0	103	100-0	40	100-0	218	100-0
जनपद	हा	75	45-7	112	50-7	64	55-7	251	50-2
	नहीं	89	54-3	109	49-3	51	44-3	249	49-8
	जनपद	164	100-0	221	100-0	115	100-0	500	100-0

लाभान्वित होने के लिए प्रयास

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान चयनित उत्तरदाता महिलाओं के स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के अन्तर्गत लाभान्वित होने के लिए प्रयासों के आकलन हेतु प्रश्न पूछा गया था कि "क्या आप या आपके परिजन ने स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के तहत लाभान्वित होने के लिए प्रयास किये हैं?" जनपद की विभिन्न तहसीलों एवं जाति वर्गों की चयनित उत्तरदाता महिलाओं के योजना/कार्यक्रम के अन्तर्गत लाभान्वित होने के लिए प्रयासों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण तालिका 5 तथा व्याख्या निम्नलिखित है।

ललितपुर तहसील में चयनित उत्तरदाता महिलाओं की संख्या जिन्होंने स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के अन्तर्गत लाभान्वित होने के लिए प्रयास किये थे 35.8 प्रतिशत जबकि प्रयास नहीं किये थे 64.2 प्रतिशत रहीं, वहीं महरौनी तहसील में इनकी संख्या क्रमश: 31.6 तथा 68.4 प्रतिशत एवं तालबेहट तहसील में 24.8 तथा 75.2 प्रतिशत थी। जनपद की सामान्य जाति वर्ग के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाता महिलाओं की संख्या जिन्होंने स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के अन्तर्गत लाभान्वित होने के लिए प्रयास किये थे 29.3 प्रतिशत जबकि प्रयास नहीं किये थे 70.7 प्रतिशत रहीं, वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग में इनकी संख्या क्रमश: 30.3 तथा 69.7 प्रतिशत एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग में 27.8 तथा 72.2 प्रतिशत थी। निष्कर्ष था कि जनपद में चयनित उत्तरदाता महिलाओं की संख्या जिन्होंने स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के अन्तर्गत लाभान्वित होने के लिए प्रयास किये थे 29.4 प्रतिशत जबकि प्रयास नहीं किये थे 70.6 प्रतिशत रहीं।

तालिका 5: स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम के तहत लाभान्वित होने के लिए प्रयास

तहसील	प्रत्युत्तर	सामान्य		अपिव		अजा एवं अज		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	la[;k	संख्या	प्रतिशत	संख्या
ललितपुर	हा	10	33-3	14	36-8	10	37-0	34	35-8
	नहीं	20	66-7	24	63-2	17	63-0	61	64-2
	तहसील	30	100-0	38	100-0	27	100-0	95	100-0
महरौनी	हा	20	33-9	28	35-0	11	22-9	59	31-6
	नहीं	39	66-1	52	65-0	37	77-1	128	68-4
	तहसील	59	100-0	80	100-0	48	100-0	187	100-0
तालबेहट	हा	18	24-0	25	24-3	11	27-5	54	24-8
	नहीं	57	76-0	78	75-7	29	72-5	164	75-2
	तहसील	75	100-0	103	100-0	40	100-0	218	100-0
जनपद	हा	48	29-3	67	30-3	32	27-8	147	29-4
	नहीं	116	70-7	154	69-7	83	72-2	353	70-6
	जनपद	164	100-0	221	100-0	115	100-0	500	100-0

बच्चों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव

ललितपुर तहसील में चयनित उत्तरदाता महिलाओं में से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम का बच्चों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव मानने वाली महिलाओं की संख्या 14.7 प्रतिशत, संदेह की स्थिति 52.6 प्रतिशत रही जबकि शेष 32.6 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम का बच्चों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव नहीं माना, वहीं महरौनी तहसील में इनकी संख्या क्रमश: 10.7, 58.8 तथा 30.5 प्रतिशत एवं तालबेहट तहसील में 11.5, 63.8 तथा 24.8 प्रतिशत थी। जनपद की सामान्य जाति वर्ग के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाता महिलाओं में से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम का बच्चों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव मानने वाली महिलाओं की संख्या 12.2 प्रतिशत, संदेह की स्थिति 73.2 प्रतिशत रही जबकि शेष 14.6 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम का बच्चों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव नहीं माना, वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग में इनकी संख्या क्रमश: 13.6, 58.8 तथा 27.6 प्रतिशत एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग में 7.8, 42.6 तथा 49.6 प्रतिश

त थी। निष्कर्ष था कि जनपद में चयनित उत्तरदाता महिलाओं में से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम का बच्चों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव मानने वाली महिलाओं की संख्या 11.8 प्रतिशत, संदेह की स्थिति 59.8 प्रतिशत रही जबकि शेष 28.4 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम का बच्चों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव नहीं माना।

ललितपुर तहसील में चयनित उत्तरदाता महिलाओं से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम का उनके सामाजिक दायरा वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव मानने वाली महिलाओं की संख्या 37.9 प्रतिशत, संदेह की स्थिति 49.5 प्रतिशत रही जबकि शेष 12.6 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम का उनके सामाजिक दायरा वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव नहीं माना, वहीं महरौनी तहसील में इनकी संख्या क्रमशः 28.3, 58.8 तथा 12.81 प्रतिशत एवं तालबेहट तहसील में 27.1, 63.8 तथा 9.2 प्रतिशत थी। जनपद की सामान्य जाति वर्ग के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाता महिलाओं से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम का उनके सामाजिक दायरा वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव मानने वाली महिलाओं की संख्या 22.6 प्रतिशत, संदेह की स्थिति 73.2 प्रतिशत रही जबकि शेष 4.3 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम का उनके सामाजिक दायरा वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव नहीं माना, वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग में इनकी संख्या

क्रमशः 23.5, 58.8 तथा 17.6 प्रतिशत एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग में 51.3, 40.0 तथा 8.7 प्रतिशत थी। निष्कर्ष था कि जनपद में चयनित उत्तरदाता महिलाओं से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम का उनके सामाजिक दायरा वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव मानने वाली महिलाओं की संख्या 29.6 प्रतिशत, संदेह की स्थिति 59.2 प्रतिशत रही जबकि शेष 11.2 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम का उनके सामाजिक दायरा वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव नहीं माना।

ललितपुर तहसील में चयनित उत्तरदाता महिलाओं की संख्या जिनकी सामाजिक स्थिति में स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम से सुधार हुआ था 18.9 प्रतिशत थी जबकि शेष 81.1 प्रतिशत की सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं था, वहीं महरौनी तहसील में इनकी संख्या क्रमशः 17.6 तथा 82.4 प्रतिशत एवं तालबेहट तहसील में 14.2 तथा 85.8 प्रतिशत थी। जनपद की सामान्य जाति वर्ग के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाता महिलाओं की संख्या जिनकी सामाजिक स्थिति में स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम से सुधार हुआ था 15.9 प्रतिशत रही, जबकि 84.1 प्रतिशत की सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ था, वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग में इनकी संख्या क्रमशः 15.8 तथा 84.2 प्रतिशत एवं अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग में 18.3 तथा 81.7 प्रतिशत थी। निष्कर्ष था कि जनपद में चयनित उत्तरदाता महिलाओं में से 16.4 प्रतिशत की सामाजिक स्थिति में स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम से सुधार हुआ था जबकि शेष 83.6 प्रतिशत की सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ था।

ललितपुर तहसील में चयनित उत्तरदाता महिलाओं से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम को अच्छी मानने वाली महिलाओं की संख्या 32.6 प्रतिशत, सामान्य 7.4 प्रतिशत रही जबकि शेष 60.0 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम को बेकार माना, वहीं महरौनी तहसील में इनकी संख्या क्रमशः 20.3, 11.8 तथा 67.9 प्रतिशत एवं तालबेहट तहसील में 18.8, 10.1 तथा 71.1 प्रतिशत थी।

जनपद की सामान्य जाति वर्ग के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाता महिलाओं से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम को अच्छी मानने वाली महिलाओं की संख्या 23.8 प्रतिशत, सामान्य 6.1 प्रतिशत रही जबकि शेष 70.1 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम को बेकार माना, वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग में इनकी संख्या क्रमशः 20.8, 10.4 तथा 68.8 प्रतिशत एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग में 21.7, 15.7 तथा 62.6 प्रतिशत थी। निष्कर्ष था कि जनपद में चयनित उत्तरदाता महिलाओं से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना/कार्यक्रम को अच्छी मानने वाली महिलाओं की संख्या 22.0 प्रतिशत, सामान्य 10.2 प्रतिशत रही जबकि शेष 67.8 प्रतिशत महिलाओं ने योजना/कार्यक्रम को बेकार माना।

संदर्भ साहित्य

1. ब्लैक एवं चैम्पियन, 1976। मैथड्स एण्ड इष्यूज़ इन सोषल रिसर्च। उद्धत-सिंह, ए0के0, 2006, मनोविज्ञान, समाजषास्त्र एवं षिक्षा में षोध विधियाँ, पटना, मोतीलाल बनारसीदास, पृ0 219।
2. बेस्ट एवं काहन 1992। रिसर्च इन एजुकेशन, पृ0 17। उद्धत-सिंह, ए0के0, 2006, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना, मोतीलाल बनारसीदास, पृ0 5।
3. भट्टाचार्य, आर. और वैक्योलाइन, पी. 2013। एक भ्रम या ग्रामीण जीवन रेखा? असम की महिला लाभार्थियों पर महात्मा गांधी ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के प्रभाव का विश्लेषण। अंतरिक्ष और संस्कृति, भारत, 1-11।
4. भार्गव, एम0, 2001। आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन,